قائدملت مولانا سید کلب جواد نقوی

سرپرستِ آل انڈیا علی کانگریس، لکھنؤ

ایک تعارف

تالیف

ڈاکٹر سید امانت حسین نقوی

ناشر

آل انڈیا علی کانگریس، لکھنؤ

क़ाइदे मिल्लत मौलाना

सय्यिद कल्बे जवाद नक़वी साहिब

(संरक्षक, ऑल इण्डिया अली काग्रेस)

एक परिचय

डॉ0 सय्यिद अमानत हुसैन नक़वी

प्रकाशक

ऑल इण्डिया अली कॉग्रेस, लखनऊ

क़ाइदे मिल्लत मौलाना
सय्यिद कल्बे जवाद नक़वी साहिब
(संरक्षक, ऑल इण्डिया अली कांग्रेस)

एक परिचय

डॉ0 सय्यिद अमानत हुसैन नक़वी

प्रकाशक
ऑल इण्डिया अली कॉग्रेस
लखनऊ

नाम किताब
क़ाइदे मिल्लत मौलाना सय्यिद कल्बे जवाद नक़वी साहिब,
एक परिचय
संकलन कर्ता
डॉ सय्यिद अमानत हुसैन नक़वी
प्रेस
नुक्कर प्रिन्टिंग एण्ड बाइंडिंग सेंटर, लखनऊ
प्रकाशक
आल इण्डिया अली कांग्रेस, लखनऊ
प्रकाशन का सन्
दिसम्बर 2019 ई0
मूल्य
20/– रुपये

मिलने का पता
नूरे हिदायत बुक डिपो
इमामबाड़ा ग़ुफ़रान मआब, मौलाना कल्बे हुसैन मार्ग, चौक,
लखनऊ 226003 (उ0 प्र0) भारत
फ़ोन 0522–2252230, 09305507217, 08736009814
E-mail: noorehidayat@gmail.com
www.noorehidayatfoundation.org

ऑल इण्डिया अली कांग्रेस

ये किताबचा ऑल इण्डिया अली कांग्रेस के इशाअती सिलसिले की एक कड़ी है जिसमें क़ाइदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी सरपरस्त ऑल इण्डिया अली कांग्रेस का मुख़्तसर ज़िन्दगी नामा उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी में है साथ ही मेरा एक मज़मून ''ख़ानदाने इज्तेहाद'' उर्दू और हिन्दी में है जो माहनामा ''शुआ–ए–अमल'' के अलावा दूसरे अख़बारात व जरायद में शाए हो चुका है। ऑल इण्डिया अली कांग्रेस की जानिब से मेरे सद्र बनने के बाद से यह चौथा इल्मी काम है। इससे पहले हिन्दी और उर्दू में आयतुल्लाहिल उज़मा सय्येदुल उलमा सय्यिद अली नक़ी नक़वी आलिम के दो किताबचे इमाम हुसैन का पैग़ाम आलमे इंसानियत के नाम 2–ज़ुलजनाह और 3–सय्येदुश्शुहादा नम्बर है। इंशाअल्लाह जल्द ही दूसरे मासूमीन के नाम से नम्बर शाए होंगे। लेकिन इस किताबचे के फ़ौरन बाद ही हमारे मूरिसे आला, आलिमे इत्तेहाद पसंद जनाब दीवान सै0 नासिर अली नक़वी का मुख़्तसर तज़किरा और मरहूम का वक़्फ़नामा उर्दू और हिन्दी में मनज़रे आम पर इंशाअल्लाह आएगा।

क़ाइदे मिल्लते जाफ़रिया–ए–हिन्द मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब ने जिस तरह यादगारे ज़माना ख़िदमात क़ौमो मज़हब के लिए पेश किए हैं वह आबे ज़र से लिखने के लायक हैं जिनका चर्चा मुल्क ही नहीं बेरूने मुल्क, ममालिक में भी है। उम्मीद है कि गुज़िश्ता की तरह इस किताबचे से भी क़ारेईन इस्तेफ़ादा करते हुए बन्दे को दुआओं में याद रखेंगे।

डॉक्टर सै0 अमानत हुसैन नक़वी
सद्र ऑल इण्डिया अली कांग्रेस, सफ़ीना अपार्टमेंट नेपियर रोड, हुसैनाबाद, लखनऊ मो0–07398216745

क़ाइदे मिल्लत मौलाना सय्यिद कल्बे जवाद

नक़वी साहिब : एक परिचय

आप का जन्म 4 जनवरी 1953 ई को जौहरी मुहल्ला लखनऊ मे एक इल्मी साहित्यिक और कार्यशील परिवार यानी ख़ानदाने इज्तिहाद मे हुआ । आपके पिता श्री सफ़्वतुल उलमा मौलाना सैयद कल्बे आबिद नक़वी ताबासराह अपने समय के बड़े आलिम घर्माचार्य प्रोफ़ेसर और समाजिक नेता थे जो डीन फैकल्टी आफ थियालॉजी अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ रहे । आप के दादा ज़ाकिरे शामे गरीबॉ उम्दतुल उलमा आयतुल्लाह सैयद कल्बे हुसैन उर्फ कब्बन साहब 'अख़्तर' सुपुत्र कुदवतुल उलमा आयतुल्लाह सैयद आका हसन नक़वी 'अकमल' जायसी सुपुत्र आयतुल्लाह सैयद कल्बे हुसैन नक़वी सुपुत्र रईसुल उलमा मौलाना मुहम्मद वली हुसैन नक़वी थे जो मुल्ला इस्मतुल्लाह सदरूस्सुदूर (प्रमुख घर्माचार्य का पद' मुगलकालीन) की सन्तान थे । आपके नाना बाक़िरूल उलूम मौलाना सैयद बाक़िर रिज़वी सुपुत्र आयतुल्लाह सैयद अबुल हसन थे । आप 4 क्रमों से ख़ानदाने इज्तिहाद के वंशज है । आपने इब्तेदाई तालीम घर पर अपने पिताश्री और मौलाना मुहसिन नवाब साहब से पायी । फिर सुल्तानुल मदारिस में 1968 ई0 में मौलवी में दाख़िला लिया और वहॉ से मौलवी आलिम फ़ाज़िल सनदुल अफ़ाज़िल और सदरुल अफाजिल (1975) की डिग्री ली । लखनऊ विश्वविद्यालय से फ़ाज़िले

तफ़सीर (1971) बी० ए० (1973) और एम० ए० (अंग्रेज़ी) (1975) में किया । मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ से बी० टी० एच० और एम० ए० (फार्सी) (1978) और एम फिल (1983) में किया ।

21 नवम्बर 2019 ई0 को ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अरबी, फरसी व उर्दू यूनिवर्सिटी, लखनऊ ने उत्तर प्रदेश की गर्वनर के हाथों आप को डाक्ट्रेट की एज़ाज़ी डिगरी प्रदान की।

सुल्तानुलमदारिस में मौलाना सैयद अली हुसैन साहब, हकीम मौलाना गुलाम रज़ा साहब, मौलाना अल्ताफ हैदर साहब, मौलाना सैयद मुहम्मद महदी साहब और सैयद मुहम्मद सालेह साहब और मौलाना सैयद अली रिज़वी साहब जैसे महान उस्तादों से शिक्षा ली।

13 दिसम्बर 1986 ई को आपके वालिद का एक दुर्घटना में इन्तेकाल होगया । इसके बाद 1987 मे कुम ईरान विश्व प्रसिद्व हौज़ए इल्मिया (ज्ञानाश्रम) गये और आक़ाई अली महदी, आक़ाई एतेमादी, आक़ाई पायानी, आक़ाई विजदानी फख्र, आक़ाई नासिर मकारिम शीराज़ी, आक़ाई जाफ़र सुब्हानी जैसे सर्वश्रेष्ठ धर्माचार्यो के सेमिनरी लेक्चर का श्रेय शरफ़ प्राप्त किया। 2001 ई0 में भारत वापस हो धर्म सेवा लगे रहे । वालिद के इन्तेकाल के बाद ही लखनऊ के इमामे जुमा नियुक्त हुए इसके बाद आप

1 नूरे हिदायत फाउन्डेशन के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

2 मजलिसे उलमा–ए–हिन्द सिक्रेटरी हैं।

3 अन्जुमेन पास्दाराने हुसैनी के संस्थापक और संरक्षक है

4 आल इन्डिया अली कांग्रेस के संरक्षक है ।

5 आल इन्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य है ।

6 मदरसतुल वाएजीन लखनऊ के चांसलर है ।

7 मजलिसे उलमाए हिन्द के जनरल सेकेट्री हैं।

8 अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के थियोलॉजी विभाग में दूसरी बार ऑनरेरी प्रोफेसर बनाए गये हैं।

9 इसके अलावा सैकड़ों इल्मी शोध प्रेणनात्मक संस्थाओं के प्रमुख संरक्षक है ।

अपने वालिद की तरह आप लखनऊ के अज़ा के जुलूसों को खुलवाने के लिए सतत प्रयासरत रहे । इसके लिए आपने 1997 मे संगठित आन्दोलन चलाया आपको जेल भी भेजा गया। आपके बलिदानों और नेत्रित्य का असर था कि जुलूस खुले। आप अपनी सतत धर्मिक और राष्ट्रीय सेवाओं से सुविख्यात है । साथ ही आप मानवता के सबल संग्रामी, मुस्लिम एकता के ध्वज धारी और राष्ट्रीय एकता के प्रमुख पक्षधर के रूप में अपनी पहचान स्थापित किये हुए हैं ।

पुस्तकें

1 ईरान का इन्किेलाबे इस्लिामी, फितनए वहाबिअत और शीईयत (1986) प्रकाशक; मकतबे ईमान जौहरी मुहल्ला लखनऊ मनजूर नोमानी ने अपनी किताब इन्किलाबे इस्लिामी ईरानी और शीईयत में शिया धर्म विश्वासों पर निशाना साधकर यह साबित करने कि कोशिश की शिया काफ़िर हैं और ईरान का इन्किलाब इस्लिामी नही अ इस्लामी है । इसके जवाब मे आपने साबित किया कि शिया विश्वास ही अस्ल मे इस्लामी

विश्वास है और जो जो शियों के आकिदे है वे सारे इस्लामी फिरकों में मिलते है । इस बारे में आपने अहले सुन्नत की किताबों से तर्क किया। तक़ैया, कुरआन मे फेरबदल, मुतअ्, बदा जैसे प्रश्नों की शोध चर्चा की ।

2 इस्लाम दीने हक (मजलिसों का संकलन) (1999) प्रकाशक अहबाब पब्लिशर्स लखनऊ इमामे जमाना के सम्बन्ध में इमाम बाड़ा गुफरानमाब के अशरे मे मजलिसों का संकलन है ।

3 मुख्तसर तारिख़े उसूले फिक़ह (इस्लाम धर्मविधि शास्त्र के सिद्धान्तों का संक्षिप्त इतिहास) अप्रकाशित किया इसमें उसूले फिक़ह का इतिहास है साथ मे पारिभाषिक शब्दों के मायने बताये गये है ।

4 तारीख़े फिक़्हे शिया (शिया धर्मविधि शास्त्र का इतिहास) अप्रकाशित

5 क़ाइदे मिल्लत के लेख (हिन्दी)

6 इस्लाम और मानव अधिकार (हिन्दी): उर्दू दैनिक राष्ट्रीय सहारा में क़िस्तों में छपे लेख का संक्लन

7 इस्लाम में नारी का महत्व (हिन्दी): उर्दू दैनिक राष्ट्रीय सहारा में क़िस्तों में छपे लेख का संक्लन

नेत्रत्वपूर्ण राष्ट्रीय सामाजिक प्रयास

1 वक़्फों के संरक्षण और अनाधिकृत कब्ज़ों से छुड़ाने के लिए अन्जुमन ने पासदाराने हुसैनी की स्थापना की जिस के फलस्वरूप इमाम बाड़ा सिब्तैनाबाद का वक़्फ मुक्त कराया जो 55 वर्षो से नाजायज कब्ज़े मे था और जिसमें अग्रेज़ों ने क्लब बना लिया था । यह इमाम बाड़ा बड़े इमाम बाड़े के बाद सबसे

बड़ा इमाम बाड़ा है इसकी मरम्मत जारी है

2 वक़्फ सज्जादिया की 20 बीधा जमीन जो भूमाफ़िया के कब्ज़े में थी । उसे आज़ाद कराया और उस ज़मीन पर मस्जिद कालेज के अलावा तीन सौ ग़रीबों को मकानों के लिए ज़मीन दी गई और निर्धनों को क्वाटर्स दिये गये।

3 इमाम बाड़ा जैनुल आबिदीन का पूनः निर्माण

4 इमाम बाड़ा सज्जादिया का नव निर्माण

5 हुसैनाबाद ट्रस्ट की पुरानी इमारत की मरम्मत और सजावट भी आप के अनथक प्रयासों का फल है।

6 इसके अलावा आपके नेत्रत्व मे दिल्ली और लखनऊ मे मजारों पर हमले के विरूद्ध प्रदर्शन किया गया जिसमे दिल्ली में पहली बार परम पूज्य शन्कराचार्य सरूपानन्द सरस्वती महाराज ज्योति मेठ हरिद्वार जैसे महान हिन्दु धर्मगुरू ने भाग लिया इसके अलावा डेन्मार्क में रसूल के कार्टूनो के विरूध लखनऊ मे आप के नेत्रत्व मे विशाल प्रदर्शन किया गया जिसमे रिकार्ड 10 लाख के जन समुह ने भाग लिया जो एतिहासिक मजमा था ।

7, 13 रजब और जुमअतुल विदाअ की छुटटी पूर्व मुख्य मन्त्री श्री मुलायम सिंह यादव से 2007 में मंजूर करायी जिसकी माँग समुदाय 60 व र्षों से कर रहा था और आप की कोशिशों से पूरी हुई।

8, दिल्ली में दरगाह शाहे मर्दां के बहुमुल्य ज़मीन पर से नाजायज कब्ज़े आप की कोशिशों से हटे और आगे काफ़ी ज़मीन पर से नाजायज क़ब्ज़े ख़त्म कराने के लिए प्रयास जारी है ।

ख़ानदाने इजतेहाद

एक तआरूफ़

डॉ0 अमानत हुसैन नक़वी, मशहूर व मारूफ़ शख़्सियत डॉ0 सै0 रज़ा हुसैन नक़वी रम्ज़ के फ़रजन्द और खुद भी एक्यूपंक्चर के कामियाब डॉ0 हैं साथ ही अपने वालिद की तरह क़ौमी मसाएल से भी राबेता रखते हैं। आप आल इण्डिया अली कांग्रस लखनऊ के सद्र और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन के एज़ाज़ी कारकुन हैं क़ौमियात में भरपूर दख़ल रखते हैं। इस मज़मून निगार को ख़ानवाद–ए–दीवान नासिर अली ही के नुमाइन्दे की हैसियत से नहीं बल्कि ख़ानवाद–ए–इदारा–ए–इस्लाह खुंजवा बिहार बल्कि खुद बिहार के नुमाइन्दे की हैसियत से देखकर इस मज़मून के मुन्दरजात को देखना मुनासिब होगा। नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन को मौसूफ़ से बड़ी उम्मीदें हैं।

(नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, लखनऊ)

ख़ानदाने इज्तेहाद वो ख़ानदान है जिसके चश्मो चराग़ गुज़िश्ता आठ नस्लों से हिन्दुस्तान बल्कि बर्रे सग़ीर की इल्मी, मज़हबी अदबी और मआशेरती फिज़ा को मुतास्सिर करते रहे हैं। यही ख़ानदान था। जिसके मूरिसे आला ने हिन्दुस्तान में इज्तेहाद का संगे बुनियाद रखा ग़ुफ़रानमॉब की दुआ कि मेरे ख़ानदान में क़यामे क़यामत तक इज्तेहाद बाक़ी रहे कम से कम आज की तारीख़ तक हर्फ़ ब हर्फ़ सही होती नज़र आती है। उन्होंने ही हिन्दुस्तान में पहली बार नमाज़ें जुमा व नमाज़े

जमाअत का क़याम किया और बर्रे सग़ीर की अज़ादारी को वह शक्ल दी जो आज नज़र आती है।

जैसा कि मेरे अज़ीज़ मौलाना जाबिर जौरासी साहब ने मासिक इस्लाह के मरजइयत नम्बर जून – अगस्त 2012 में मौलाना मोहम्मद अहमद नौगांवी का तवील मज़मून हज़रत ग़ुफ़रानमॉब की तारीफ़ और तौसीफ़ में प्रकाशित किया है जिसमें मौलाना आग़ा रूही साहब के अज्दाद में से अल्लामा किन्तूरी का बयान बहुत ही अहमियत का हामिल है।

''आपकी वेलादत शबे जुमा 1166 हि0 में बमुक़ाम नसीराबाद ज़िला रायबरेली में हुई, वरसतुल अम्बिया में है कि जब आप पैदा हुए तो उस मकान में एक नूर सातेअ हुआ। नुजूमुस्समां में है कि कुतुबे उलूमे अक़्लिया फ़ोज़लाए हिन्द मसलन सन्दीले में मुल्ला हैदर अली पिसर मुल्ला हम्दुल्लाह सनदेलवी से और इलाहाबाद में रहकर सैय्यद गुलाम हुसैन दकनी से पढ़ी फिर रायबरेली में मौलवी बाबुल्लाह शागिर्दे अर्शद मुल्ला हम्दुल्लाह मम्दूह से पढ़ीं। और फिर फैज़ाबाद होते हुए लखनऊ तशरीफ़ लाए और नवाब सरफ़राजुद्दौला मिर्ज़ा हसन रज़ा खान साहब की इम्दाद से बराहे सिन्ध ज़ियाराते मशाहिदे मुक़द्दसा से मुशर्रफ होकर कर्बला–ए–मुअल्ला में आक़ा बाक़िर बहबहानी और आक़ा सैय्यद अली तबातबाई और आक़ा सैय्यद महदी मूसवी शहरिस्तानी से और नजफ़े अशरफ़ में हज़रत बहरूल उलूम आक़ा सैय्यद महदी तबातबाई यज़दी से तहसीले उलूमे फ़िक़्ह व हदीस व उसूले फ़िक़्ह वग़ैरह फ़रमाया और 1194 हि0 में ज़ियारते

मशहदे मुक़द्दस से मुशर्ररफ हुए और वहां जनाब सैय्यद महदी बिन सैय्यद हिदायतुल्लाह अस्फ़हानी की ख़िदमत में रहकर कस्बे इफ़ादात फ़रमाया और उन्हीं बुज़ुर्गों ने इजाज़ा हाए इज्तेहाद दिये और हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए। आपका फ़ज़लो कमाल व उलूवे मरतबत व इज्लाल बयान से बाहर है। फ़क़त यही काफ़ी है कि हिन्दुस्तान में दीने इस्लाम आपके ही वजूदे जीज़ूद से पाया जाता है। शज़रूल अक़ियान में है कि आयतुल्लाह फ़िल्आलमीनल्लज़ी अहियद्दीने फ़िद्दयारिल हिन्द वतमस्सा आसार आसारूल बदअ वलेजाहेलिय्यतो मौलाना अस्सयिद दिलदार अली अन्नसीराबादी''

अहले इल्म पर क्या जोहला पर भी आपका एहसान है जैसे हज़रत अली अ0 की तलवारे आबदार ने सरकशाने अरब को ज़ेर कर दिया और लातो उज्ज़ा व मिनात तीनों को ताक़ हाए हरम से मुंह के बल गिरा दिया ऐसे ही हिन्दुस्तान में अगरचे बराए नाम तशय्यो था मगर कहीं नश्श–ए–भंग नोशी, कहीं अहमद कबीर की गाय, कहीं सद्दू का बकरा, कहीं मीरा जी के गुलगुले, होते थे। यहां भी दिलदार अली रह0 की सैफ़े क़लम ने हिन्दुस्तान कि जो कुफ्रिस्तान था दारूल ईमान बना दिया। आपके इस खुलूस का असर है कि जो जा बजा इस ज़मान–ए–पुर आशोब में फिर कर दुश्मनों में रहकर अरबो अजम का सफ़रे दूर दराज़ करके उलूमे दीनिया हासिल करके तहते कुब्ब–ए–अबी अब्दिल्लाहिल हुसैन जो दुआ मांगी थी कि मेरी औलाद में ता ज़हूरे क़ाएमे आले मुहम्मद अ0 इल्मे दीन क़ाएम रहे सो बेहम्दिल्लाह अब तक है और इन्शाअल्लाह रहेगा

और आपका ख़ान्दान 'ख़ान्दाने इज्तेहाद' के नाम से क़ायम हो गया।.........

अख़बारे इमामिया लखनऊ में अल्लामा कन्तूरी का मज़मून छपा है जिसका खुलासा ये है कि कोई शिया जाहिल हो या आलिम इन्कार नहीं कर सकता कि जनाबे गुफ़रानमॉब रह0 ने अपनी जान जोखम उठाकर इराक़ से इजाज़ात लाए और रोवसाए अवध को राम करके दीने हक़ की इशाअत में लाखों रूपया खर्च कराके हज़ारहा नहीं तो सदहा उलमा–ए–दीन बनाए। बिला शुब्हा हिन्दुस्तान में इस हमारे हादिये दीन ने वो काम किया जो मदीने में उनके जद्दे नामदार ने। मेरे एक बुज़ुर्ग रसूलपूरी जो आपके सफ़रे इराक़ में रफ़ीक़ थे उनकी चश्मदीद हिकायत जिसको हमारे बुज़ुर्गाने ख़ान्दानी हमेशा विर्दे ज़बान रखे थे, कहते हैं कि जब हमको नजफ़े अशरफ़ में माहे सेयाम की शबे क़द्र हुई तो जनाबे गुफ़रानमॉब ने हमको आमाले शबे क़द्र पढ़ाये और खुद भी पढ़े और अहयाये शबे क़द्र किया और फ़रमाया कि देखो जब एक उमूदे नूर कुब्ब–ए–मुबारक से लेकर आसमान तक नज़र आये तो वही अलामत शबे क़द्र की पूरी है और इस्तेजाबते दुआ का वही वक़्ते मौऊद है अगर मैं सो जाऊं तो मुझे जगा देना और तुम सो जाओगे तो मैं तुमको जगा दुंगा। इत्तेफ़ाक़न जनाबे गुफ़रानमॉब की आंख लग गयी और वो नूर सैय्यद साहब को नज़र आया तो फ़ौरन जनाबे गुफ़रानमॉब को जगा दिया आपने फौरन वुज़ू फ़रमाया और मसरूफ़े दुआ हुए और ये भी दुआ की कि खुदा वन्द!! बेहक़्क़े साहबे क़ब्र, मेरी औलाद से ता क़यामत इल्मे दीन न

जाये यही दुआ ऐसी मुस्तजाब हुई कि जिसका असर क़यामत तक के लिए आपकी औलाद में इन्शाअल्लाह तआला बाक़ी रहेगा और हमारा ईमान इसी पर है। सैय्यद साहब ने दुआ की खुदा वन्दा रसूलपूर में बारापट्टी में सिवाय मेरी पट्टी के और कोई शरीक न रहे जनाबे गुफ़रानमॅाब ने एक दो हथ्थड़ उनको मारा कि ऐ कम्बख़्त ये क्या दुआ मांगी सैय्यद साहब बोले तुम ज़मींदारी का मज़ा क्या जानो, मुल्ला आदमी लड़के पढ़ाने का तुमको मज़ा है ज़मींदारी की जड़ पताल में होती है जैसे दूब की जड़।...... इस ख़ान्दाने हिदायत के दुश्मन बदख़्वाह और हमेशा रूसियाह रहेंगे............. ''

आपने 19 रजब 1235हि0 में बादशाहे अवध ग़ाज़ियुद्दीन हैदर के अहद में इन्तेक़ाल फ़रमाया और अपने इमामबाड़े में दफ़्न हुए।

(ग़ैबते ह़ज़रते हुज्जत व ख़िदमाते मरजईयत नम्बर, माहनामा इस्लाह, लखनऊ जून ता अगस्त 2012 ब–इदारत मौलाना सै0 मुहम्मद जाबिर जौरासी साहिब)

इसी ख़ानदान के उलमा थे जिन्होंने हिन्दुस्तानी अवाम को मज़हब और अज़ादारी की तरफ़ मायल किया। इन्हीं का असर–ओ–रूसूख था। कि शायद हिन्दुस्तान में पहली बार नवाबीन ने आलीशान महल तामीर करने की जगह वह इमामबारगाहें और मस्जिदें बनवाईं जिन पर लखनऊ और दीगर मक़ामात को आज भी नाज़ है। इसमें कोई दो राय नहीं कि लखनऊ से उठने वाली 'या हुसैन' की सदा ने तमाम हिन्दुस्तान की फिज़ा को मोअत्तर कर दिया। यहां से ताज़ियादारी का

रिवाज जो कायम हुआ तो ग्वालियर, कलकत्ता, बिहार और गोलकुण्डा की तरह सैकड़ों जगह के हिन्दु तक ताज़िए रखने लगे। यहां के मदरसों और इल्मी माहौल का असर तमाम हिन्दुस्तान के इल्मी, मज़हबी, अदबी और मआशिरती माहौल पर पड़ा। यहां तहज़ीब की जो नींव डाली उसकी झलक आज भी देखने को मिलती है।

ख़ानदाने गुफ़रानमॅाब के अफ़राद की काविशें और कामियाबियां कुर्बानी और ईसार के बिना हासिल नहीं हो सकती थीं। एक नवाब इनके वाज़ में यह कहे हुए शामिल हुए कि अगर शराब के ख़िलाफ़ बोले तो गला काट देना। जान का ख़ौफ़ होता तो शराब के ख़िलाफ बोलने से परहेज़ करते। लेकिन बोले और नतीजा यह हुआ कि नवाब ने शराब नोशी से न सिर्फ तौबा कर ली बल्कि उनकी नज़र में आपकी इज़्ज़त बहुत बढ़ गयी। इसके बाद पुश्त दर पुश्त इसी ख़ानदान के उलमा नवाबीने अवध के मुशीरे ख़ास रहे। यही सरपरस्ती व निगरानी सबब बने लखनऊ के आलीशान इमामबाड़ों और मस्जिदों की तामीर का।

बेग़मात ने इमामे जमाना की छठी मनाना शुरू की तो इन्हीं उलमा ने फ़तवा दे दिया कि यह हराम है। नतीजतन तोप से उड़ा देने का हुक्म सादिर हो गया। लेकिन हक की आवाज़ बदस्तूर उठाते रहे। आख़िर हालात ऐसे बने कि नवाब को अपना हुक्म वापस लेना पड़ा। अंग्रेज़ों ने 'फूट डालो और राज करो' वाली अपनी नीति पर अमल करना चाहा तो इन्हीं उलमा के फ़तवों ने अवध के हिन्दुओं और मुसलमानों को जोड़े

रखा यहां तक कि 1854–55 में ही अयोध्या में मंदिर मस्जिद झगड़ा पैदा करने की कोशिश की गयी लेकिन खानदान के उलमा ने फिरंगीमहल के उलमा के साथ मिलकर उस कोशिश को भी नाकाम कर दिया।

वतन परस्ती ऐसी की अंग्रेज़ों को भी मालूम था कि यही वह दहलीज़ है जहां से जुड़े रहने के सबब अवाम अंग्रेज़ों की मौजूदगी बरदाश्त नहीं कर पा रहे थे। बेगम हज़रत महल ने तलवार संभाली तो उनकी मुख़्तसर सी सिपाह जेहाद का फ़तवा इसी ख़ानदान के उलमा से लेकर निकली। नतीजतन 1857 के गदर में सारे हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों को सबसे भारी नुक़सान अवध में ही उठाना पड़ा।

आख़िर अंग्रेज़ों की फतेह हुई तो अवध में सबसे भारी कुर्बानी एक बार फिर इसी ख़ानदान के अफ़राद को देनी पड़ी। गुफरानमॉब इमामबाड़े से फिरंगीमहल फाटक तक मकानों का सिलसिला था जिसे ख़ानदान के अफ़राद आबाद किए थे। अंग्रज़ों के जुल्म के आगे बहुत से अफ़राद को दरबदर होना पड़ा। नौबत यहां तक आ गयी कि अंग्रेज़ों ने तमाम मकानात गिरा कर उस पर अपनी महारानी की याद में विक्टोरिया स्ट्रीट बना डाली।

इन सब मज़ालिम के बावजूद हक के लिए आवाज़ उठती रही और इत्तेहाद का पैग़ाम दिया जाता रहा। अंग्रेज़ों ने आसफ़ी मस्जिद को घोड़ों का अस्तबल बनाया तो इसी ख़ानदान के उलमा थे जिन्होंने मुकदमा लड़ा ओर आख़िरकार लंदन तक गए जहां उन्हें कामियाबी मिली और मस्जिद में दोबारा नमाज़ क़ायम हुई और साथ टीले वाली मस्जिद को भी छुड़वाकर अहले

सुन्नत की नमाज़ भी क़ायम करवाई। आज़ादी की लड़ाई में भी इस ख़ानदान के उलमा मुस्तक़िल कोशिश करते रहे।

अवध पर क़ब्ज़ा जमा लेने के बाद 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर ज़ोर शोर से अमल शुरू हो गया। खानदान के उलमा के सामने कठपुतली नामनेहाद उलमा खड़े कर दिए गये। यह सिलसिला आज भी जारी है। यह ऐसे अफ़राद थे जो इल्म भी रखते थे, जाकिरी भी करते थे लेकिन माद्दियत में ऐसे गिरफ़्तार थे कि अंग्रेज़ों की मर्ज़ी के हिसाब से हुक्म सुनाते थे और उनकी हुकूत के इस्तेहकाम के लिए कोंशाँ रहते थे। हुकूमत के इन दलालों ने लखनऊ की इल्मी और मज़हबी फिज़ा को हर मुम्किन नुक़सान पंहुचाया और आज भी पंहुचा रहे हैं।

ख़ानदाने इज्तेहाद के उल्मा व मराजे जहां बर्रे सग़ीर में इल्मी क़यादत कर रहे थे वहीं तमाम उलूम व फ़ोनून में तसानीफ़ के हमराह अपने आमाल व किरदार से भी रहबरी का काम अन्जाम देते रहे साथ ही मदरसों, किताबखानों, मस्जिदों, इमामबाड़ों, मुसाफिरखानों, यतीमों के लिए गुस्ल खानों और नेज़ दूसरे फ़लाही कामों को इस तरह अन्जाम दिया कि आज तक उनके और उनके असरात के फ़यूज़ जारी हैं।

आज का ख़ानदाने इज्तेहाद

हज़रत गुफ़रानमॉब की दुआ कि उनकी ''नस्ल में क़यामे क़यामत तक इल्म बाक़ी रहे'' में इतनी तासीर थी कि आज आठ, नौ नस्लें गुज़र जाने के बाद भी उस दुआ का असर देखा जा सकता है। आलीजनाब आयतुल्लाह मौलाना

काज़िम नक़वी, अल्लाह उन्हें तवील उम्र अता करे (अभी साल भर पहले आपका इन्तेक़ाल हो गया जब मज़मून लिखा गया था तो आप बक़ैदे हयात थे), आज हिन्दुस्तान में शियों के सबसे बड़े आलिम और क़ाबिले तकलीद मुजतहिद हैं। नजफे अशरफ़ में सालहा साल तहसीले इल्म में गुज़ारने के बाद वह हिन्दुस्तान वापस आए तो अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से मुनसलिक हो गये जहां से डीन थियालोजी डिपार्टमेन्ट के ओहदे पर रहते हुए सुबुकदोश हुए। अपने बड़े भाई सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी की तरह मौलाना काज़िम नक़वी को भी तकरीर और तहरीर दोनों पर कुदरत हासिल है। उन्होंने कई किताबें तहरीर कीं जिनमें ज़्यादा अभी मंजरे आम पर आना बाक़ी हैं।

ख़ानदान के एक और फ़र्द जिन्हें अल्लाह ने न सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया भर में इज़्ज़त से नवाज़ा वह डाक्टर कल्बे सादिक़ नक़वी हैं। हिन्दुस्तान में कौम के अफ़राद की बदहाली डाक्टर कल्बे सादिक़ को चैन से बैठने नहीं देती। इल्म की तरफ़ अवाम को रागिब करना उनका मुस्तक़िल शेवा है। यही सबब है कि उन्होंने युनिटी पब्लिक स्कुल और मदीनतुल उलूम जैसे इदारे बना कर कौम के सुपुद्र कर दिए जहां से मुस्तक़िल तौर पर कौम के बच्चों को इल्म दिया जा रहा है। सेहत के मैदान को भी डाक्टर कल्बे सादिक़ ने अछूता नहीं रहने दिया। लखनऊ को इरा मेडिकल कालिज उनकी काविशों का जीता जागता नमूना है। इसके क़याम के लिए उनकी कोशिशों का अंदाज़ा इस बात से हो सकता है कि

उन्होंने सालहा साल दुनिया के गोशे गोशे में घूमकर कालिज के क़याम के लिए मदद फ़राहम की और आख़िरकार आज इतना बड़ा अस्पताल कायम हो सका। तौहीदुल मुस्लमीन ट्रस्ट दुनिया भर के मोमिनीन से पैसा इकट्ठा करके हिन्दुस्तान में ग़रीबों के इलाज पर खर्च कर रहा है।

मौलाना काज़िम नक़वी के छोटे भाई आलीजनाब आयतुल्लाह मौलाना बाक़िर नक़वी दुबई में मुक़ीम हैं और वहां रहते हुए फरोग़े इल्म और तदरीस की जिम्मादारी निभा रहे हैं। हिन्दुस्तान में कौम के मआशी हालात को सुधारने के लिए आप भी हत्तलइमकान कोशां रहते हैं। मौलाना बाक़िर नक़वी को भी तहरीर और तकरीर दोनों पर कुदरत हासिल है। आपकी कई किताबें मंज़रे आम पर आ चुकी हैं और अरबी व उर्दू में बहुत सी किताबें ग़ैर मतबूआ हैं।

सैय्यदुल उलमा के फ़रज़न्द डाक्टर अली मुहम्मद नक़वी गुफ़रानमऑब से सातवीं पुश्त में हैं। उनका शुमार इस वक़्त हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बड़े दानिश्वरों और मज़हबीस्कालरों में किया जाता है। उनकी बेशुमार किताबें न सिर्फ अंग्रजी और फ़ारसी में बल्कि दुनिया की कई बड़ी ज़बानों में छपीं हैं। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के थियोलाजी डिपार्टमेंट में आप इस वक्त डीन हैं। आपकी आमद ने इस डिपार्टमेन्ट की फआलियात में कई गुना इज़ाफ़ा कर दिया और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का यह डिपार्टमेंट सेमिनारों और मज़हबी प्रोग्रामों की सरगरम आमाजगाह बना हुआ है।

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब के चश्मों चिराग़ हुज्जतुल इस्लाम

वलमुसलिमीन मौलाना कल्बे जवाद साहब बिला शुब्हा पूरे हिन्दुस्तान में शियों के कायद के तौर पर जाने और माने जाते हैं। आप एक अच्छे जाकिर और हक परस्त आलिम हैं जो क़ौमी उमूर से मुताल्लिक मुआमलात में मुसतकिल पेश पेश रहते हैं। इस्लाम दुश्मन अनासिर की कौम में इंतेशार पैदा करने और अंग्रेज़ों की 'बांटों ओर राज करो' की नीति की पैरवी की हर मुम्किन कोशिश के बावजूद आप आज भी हिन्दुस्तान में कायदे मिल्लत के ख़िताब से जाने जाते हैं। आपने तहरीरी मैदान में भी क़दम रखा है और आपकी चन्द किताबें मंज़रे आम पर आईं हैं। आपने अपने वालिद की क़ायम करदा मजलिसे उलमा–ए–हिन्द को मजीद कुव्वत बख़्शी यहां तक कि आपकी दावत पर इस तंजीम से जुड़े उलमा और ख़ुतबा, मुल्क के कोने कोने से इकट्ठा हो जाते हैं। आप न सिर्फ इमामे जुमा मस्जिदे आसफ़ी हैं बल्कि खतीबे मिम्बर गुफ़रानमॉब भी हैं।

क़ाएदे मिल्लत एक अच्छे इन्शा परदाज़ हैं, उनके लिए फ़ाज़िल नबील चौधरी सिब्ते मुहम्मद नक़वी का एक जुम्ला बहुत काफ़ी है कि "लखनऊ" में कल्बे जवाद से गठी उर्दू लिखने वाला कोई नहीं है। आपके कई उनवानों के तहत मुस्तक़िल मज़ामीन कई साल रोज़नामा "राष्ट्रीय सहारा" उर्दू में ऐसे पेज पर छपते रहे जिन्हें पूरी दुनिया में पढ़ा गया और पसन्द किया गया।

मौलाना कल्बे जवाद के बरादरे निस्बती प्रोफ़ेसर मौलाना सै0 हुसैन कमालुद्दीन अकबर जावेद जायसी इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के शोब–ए–कानून से जुड़े रहने के साथ एक अच्छे ज़ाकिरे मिम्बरे रसूल स. भी हैं। आप अपनी ईमानदारी

और साफगोई के लिए जाने जाते हैं जो वक़्फ़ बोर्ड के चेयरमैन बनने के बाद आपके फैसलों से अयाँ है। आपका शुमार शहर इलाहाबाद की बाइज़्ज़त और बाइल्म हस्तियों में होता है।

सैय्यदुल उलमा के नवासे मौलाना तक़ी हैदर नक़वी दिल्ली में मुकीम हैं और वहां के नामवर समाजी कारकुन, सहाफ़ी और अदीब सैय्यद महमूद नक़वी मरहूम के फ़रज़न्द हैं। कुम से तालीम हासिल कर वापस आने के बाद से आप दफ़्तरे वली–ए–फक़ीह से वाबस्तगी के सबब हिन्दुस्तान भर के उलमा से जुड़े हैं और मुलक भर के क़ौमी और मज़हबी इजलास में शामिल रहते हैं।

डाक्टर कल्बे सादिक़ के फ़रज़न्द डाक्टर कल्बे सिब्तैन नूरी ने कलम का मैदान संभाल रखा है। आप कई किताबें तहरीर कर चुके हैं जो आप ही के वहदत पब्लिकेशन से चंद शाए हो चुकी हैं और आइन्दा कुछ शाए होंगी और हाल ही में डाक्ट्रेट मुकम्मल करके तदरीस के मैदान में आने की तैयारी में हैं। डाक्टर कल्बे सादिक़ के छोटे साहबज़ादे सैय्यद कल्बे महदी नक़वी उर्फ मुन्तज़िर कुर्आन मजीद का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो आख़िरी मराहिल में है और जल्द ही नज़रों के सामने आएगा।

मौलाना कल्बे जवाद के भांजे मौलाना आकिफ़ जैदी कुम ईरान में आला दर्जे की दीनी तालीम हासिल करने में मशगूल हैं। आने वाले वक़्त में हिन्दुस्तान की अवाम आपकी सलाहियतों से यकीनन फैज़याब होगी। मौलाना कमालुद्दीन अकबर के फ़रज़न्द और डाक्टर अली मुहम्मद नक़वी के

दामाद भी कानून और मज़हब की तालीम हासिल करने के बाद अब तहसीले उलूमे दीनिया के लिए ईरान तशरीफ़ ले गये हैं। आने वाले वक्त में हिन्दुस्तान में खानदान बल्कि दारूल उलूम जायस की विरासत को आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं।

मौलाना क़ायम महदी साहिब के दो फ़रज़न्द आलिम और ख़तीब हैं एक मौलाना दाएम महदी साहिब और दूसरे मौलाना साएम महदी साहिब, मौलाना साएम महदी साहिब बेरूने हिन्द, ममालिक में ज़ाकिरी के लिए मदऊ होते हैं।

लखनऊ में मौलाना सैफ़ अब्बास साहिब भी तबलीग़ी व रिफ़ाही कामों में मसरूफ़ हैं। आपने यतीमा ख़ाना, स्कूल और हौज़ा–ए–इल्मिया भी क़ायम किए हैं जो मुस्तक़िल ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं। हुसैनिया–ए–जन्नत मआब का मशहूर अशरा आप ही ख़िताब फ़रमाते हैं। आपके दोनों फ़रज़न्द तहसीले उलूमे दीनिया में इराक़ में मसरूफ़ हैं।

हिन्दुस्तान में ही नहीं पाकिस्तान में भी इस ख़ानदान के उलमा कौमी ख़िदमात अंजाम देने में मशगूल हैं। इनमें सरेफ़ेहरिस्त अफ़राद में अल्लामा नसीर इज्तेहादी के बाद पाकिस्तान के नामवर शायर इक़बाल जायसी के फ़रज़न्द और अल्लामा सै0 कल्बे अहमद मानी जायसी के पोते मौलाना हसन ज़फर नक़वी साहब का नाम आता है जो पाकिस्तान के मकबूल तरीन उलमा में से हैं। तहरीर और तकरीर दोनों में उनकी ख़िदमात हैं। मौलाना नसीर इज्तेहादी भी पाकिस्तान के एक बड़े आलिम और मुक़र्रिर व ख़तीब थे जो क़ौमी कामों में बढ़ चढ़ कर योगदान दे रहे थे।

सहाफ़त के मैदान में

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब से जुड़े अफ़राद न सिर्फ मज़हबी इल्म में बल्कि मुख्तलिफ़ दूसरे शोबों में कामियाबी की मंज़िलों पर गामज़न हैं। हिन्दुस्तान में सहाफ़त के मैदान में यह ख़ानदान खासा सरगरम था और है।

ग़ुफ़रानमॉब के बेटों के आहद से अब तक इस ख़ानदान के उलमा व उदबा ने कई प्रेस क़ायम किये और पचास से ज़्यादा माहनामे, जराएद व अख़बारात निकाले।

सैय्यद हुसैन अफ़सर नक़वी लखनऊ में कौम से ताल्लुक रखने वाले सहाफ़ियों की फेहरिस्त में सबसे बुज़ुर्ग और सीनियर सहाफी हैं। आप न सिर्फ खुद बड़े सहाफ़ी हैं बल्कि लखनऊ में बहुत से सहाफ़ी उन्हें अपना उस्ताद तसलीम करते हैं। मौजूदा वक़्त में आप 'आग अख़्बार के फीचर्स एडीटर हैं। आपकी दोनों बेटियां भी सहाफत के मैदान में हिजाब के साथ तरक़्क़ी की राह पर गामज़न हैं।

शकील हसन शम्सी भी इसी खानदान से वाबस्ता मुल्क के बड़े सहाफियों में से हैं। दुरदर्शन से कई साल तक वाबस्ता रहने के बाद आप कुछ सालों तक उर्दू अख़्बार 'राष्ट्रीय सहारा' से जुड़े रहे। मौजूदा दौर के मसाएल से मुताल्लिक़ आपकी कई किताबें मंज़रे आम पर आ चुकी हैं। हालाते हाज़ेरा पर आपकी अच्छी नज़र है। सहाफत के साथ आ अच्छे शायर और एंकर भी हैं। आपके फ़रज़न्द भी इलेक्ट्रानिक जर्नलिज़्म में क़दम रख चुके हैं।

सैय्यदुल उलमा के नवासे सैयद अज़ीज हैदर पिछले

सतरह सालों से अंग्रेज़ी सहाफ़त से जुड़े रहे हैं। कई सालों तक आपके मज़ामीन हिन्दु, हिन्दुस्तान टाईम्स, हिन्दु बिजनेस लाईन, ट्रिब्यून, बिजनेस वर्ल्ड, हाई टाईम, दैनिक जागरण वग़ैरा अख़्बारों और इंद्रमा, इंण्डिया टूडे प्लस, लाईफ वाच और हदीसे दिल जैसी मैग्ज़ीनों में जगह पाते रहे हैं। हाल में आप रियल न्यूज़ इण्टरनेशनल (आर एन आई) न्यूज़ एजेंसी में एसोसिएट एडीटर हैं जिसके ज़रिए आपके मज़ामीन मुल्क भर में अंग्रज़ी, हिन्दी और उर्दु के 80 से ज़्यादा अख़बारों में छपते रहते हैं। आप अब तक नौ किताबें लिख चुके हैं। सैय्यदुल उलमा के कायम कर्दा इदारे 'यादगारे हुसैनी' के आप सेर्केट्री हैं जिसके तहत आपने रद्दे वहाबियत, कातिलाने हुसैन अ. का मज़हब ओर शहीदे इंसानियत जैसी किताबों को प्रकाशित किया। आप आला सहाफ़ती मेयार बरक़रार रखने वाले ईमानदार सहाफ़ी के तौर पर जाने जाते हैं।

सैय्यद मुहम्मद मेहदी (उर्फ़ी) ख़ानदाने इज्तेहाद से जुड़े सहाफ़ियों की फ़ेहरिस्त को मज़ीद पुरनूर बनाते हैं। आप उर्दु सहाफ़त में अपने आला रिर्पोटिंग मेयार के लिए जाने जाते हैं। आप लखनऊ के कई बड़े अख़बारों से वाबस्ता रहे हैं। यही सब्र है कि लखनऊ के सहाफ़ी हल्कों में मक़बूल हैं। फ़िलवक्त आप उर्दु रोज़नामे 'कौमी ख़बर' से वाबस्ता हैं।

हज़रत गुफ़रानमॉब की औलाद में मौलाना सैय्यद हसन नक़वी मरहूम के फ़रज़न्द हुसैन अख़तर नक़वी का नाम भी फ़रामोश नहीं किया जा सकता जो इलेक्ट्रानिक जर्नलिज्म से गुज़िश्ता क़रीब पन्द्रह सालों से जुड़े हैं। इस दौरान आप

टाइम्स नाओ, सहारा, न्यूज़ एक्स, आज तक और कई दूसरे टीवी न्यूज़ चैनलों से जुड़े रहे। जनाब साग़र ख़्य्यामी मरहूम के तीनों फ़रज़न्द मुम्बई में रहते हुए मीडिया के मुख्तलिफ़ शोबों से जुड़े हैं और कामियाबी से हमकिनार हैं।

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब के अफ़राद सहाफ़त के अलावा भी इल्मी अदबी और मआशरती हलकों में अपनी खिदमात दे रहे हैं। सबका जिक्र कर पाना यहां मुम्किन नहीं।

¼ekfld 'kvk&,&vey ¼fgUnh] mni tuojh 2014½

Maulana Sayyed Kalb e Jawad Naqavi An Introduction

Publisher
All India Ali Congress
Lucknow

Maulana Sayyed Kalb e Jawad- An Introduction

Maulana Sayyed Kalb e Jawad was born on 4th Jan 1953 at Jauhari Mohalla, Lucknow- in a celebrated family of learnnig and religious scholastics called Khandan-e-Ijtehad. His fathar Maulana Syed Kalbe Abid, Dean faculty of Theology A.M.U Aligarh was a prolific religious scholar and community leader. His grandfather Maulana S. Kalbe Husain was reknown religious scholar and orator. His great grandfather,maternal grandfather and maternal great grandfather all were reputed religious authority.

He got elementary education at his home by his father and Maulana S. Mohsin Nawab. Afterwards he was admitted (1968) in the molvi class of Sultanul Madaris ,Lucknow where he got certificates and degree of Molvi, Alim, Fazil, Sanadul Afazil and Sadrul Afazil (1975).

In addition to it, he did 'Tazil-e-Tafseer (1971), BA. (1973), M.A in English (1975) from Lucknow University, Lucknow and BTh., M.A in Persian (1978) and M. Phil (1983) from A.M.U., Aligarh.

In Sultanul Madaris he got privilege of taking education from reputed scholar-teachers like Maulana Syed S. Ali Husain, Hakim Maulana Ghulam Raza, Maulana S. Altaf Haider, Maulana S. Mohd Mahdi, Maulana S M. Saleh, Maulana Syed Ali Rizavi, the then Principal, of this institution.

After the tragic accident of his father on 13th Dec. 1986, he went to seminary at Qum,Iran for higher religious education. He participated in the seminary lectures of spiritual figures such as Aqui Ali Muhammadi, Aqai Itemadi, Aqai Payani, Aqai Wijdani Fakhr, Aqai Nasir Makaram Shirazi and Aqai Jafer Subhani.

Ever since his return to India in 2001, he has been engaged in service to religion and the society. He was appointed Imam-e-Juma, Lucknow on his father's demise. In addition to it, he is:

(1) Founder - President, Noor-e-Hidayat Foundation, Lucknow.

(2) Reviver and Secretary, Majlis-e-Ulama-e-Hind.

(3) Founder-Patron, Anjuman Pasdarane Husaini, Lucknow.

(4) Patron, All India Ali Congress.

(5) Member, All India Muslim Personal law Board.

(6) Chancellor, Madrasatul Waezeen, Lucknow.

(7) The second time has been appointed in the theology department of Aligarh Muslim University as a honorary professor.

(8) Patron and/or chief of numerous learnning, research and social organizations and association.

On 21 November 2019 Khaja Moinuddin Chishti Urdu, Arabi and Farsi University Lucknow conferred a P.hd on Maulana Kalbe Jawad Naqavi by Governer of Uttar Pradesh Lucknow.

He has been striving hard on the footprints of his illuminated father for lifting ban (by state goverment) on Lucknow's historical, centuries old lamentation (Aza) processions. He started a well organized movement for it in 1997 and was put behind bar .It was due to his sacrifiecs to the cause and his leadership that the ban was lifted. He is known for his continued social and reigious services. Moreover he is identified with as a crusader for the cause of humanity, standard-bearer of unity among muslims and national integration.

Books, penned by him

(1) *Iran ka Islami Inqelab, Fitnae Wahhabiyat Aur Shiat* (1986) Pub. by Maktab-e-Iman, Lucknow.

Manzoor Nomani, in his book 'Inqelabi Islam lran wa Shiat,' targettig Shia faith tried to prove that Shias are kafir and lran's revolution was un-islamic.

Refuting the claim, maulana has proved that Shia beliefs are but Islamic and are common among all the Islamic sects.

In the way he has presented arguments and evidences from books of Sunni sect only. He has dealt the issues of Taqaiyya, Muta, Bada and Tahreefe Quran (Transpostion of words & alteration in the holy Quran) in a research style.

(2) *Islam Deen-e-Haq* (collection of Majlises) 1999 Pub. Ahbab Publishers, Lucknow

Collection of majlises addressed during Ashra of Moharram at Ghufran Ma'ab Imambara, Lucknow, on 'Imam-e-Zamana(af)'

(3)*Mukhtasar Tareekhe Usul-e-Fiqh*(A Brief History of Principles of Islamic Jurisprudence) (Unpub.) presented the history through ages along with explainning the terminology

(4) *Tareekh-e-Fiqh-e-Shia* (History of Shia Jurisprudaence)

Discussed are Shia jurists through ages with explanation of terminology

(5) *Shiat par Eteraz kyou* (Why objection against Shiaism) Pub. Jamiyate Talbae Jaferia, Pakistan.

(6) *Nigarishat-e. Qaide Millat* (Writings of Maulana Kalbe Jawad) Unpub.

(7) *Islam aur Huquqe Bashar* (Islam and Human Rights) Pub. as serial in daily Rashtriya Sahara, now compiled in form of a book.

(8) *Islam me Khwateen ka Martaba* (Status of Women in Islam): Pub. as serial in daily Rashtriya Sahara, now compiled in form of a book.

(9) *Qaede Millat ke Lekh* (Hindi version of '6')

(10)*Islam aur Manavadhikar* (Hindi version of '7')

(11)*Isalm mein Nari ka Sthan* (Hindi version of '8')

National and Religiosocial Services

(1) Founded Anjuman Pasdaran-e-Husain for security and release (from unauthorised possession) of Waqf properties. Under its banner, Imambara Sibtainabad Hazratganj, Lucknow was got released from unauthorised possession . This Imamabara is second biggest Imambara after Bara Imambara and was made 'club' by Britishnes Its repair is in progress now.

(2) 20- bigah land belonging to waqf Sajjadia was got released from the possession of land mafia The land was given to 300 'Poor' for building houses, and also 44 quarters were constructed and given to destitutes, some are under construction.

(3) Rennovation of Imambara Zainul Abidin is in progress

(4) Rennovation of Imambara Sajjadia

(5) The facelift of monuments and buildings of Husainabad being carried out currently is but due to his untiring efforts.

(6) Demonstrations in protest against attacks on Shrines in Iraq. In addition, demonstrations were organized under his leadership in Delhi and Lucknow. It was first time that His Holiness Shankaracharya Swaroopanand Saraswati Maharaj of Jyotirmath, Haridwar participated in such demonsraction in Delhi.

Besides it , a demonstration in protest against the cartoon of the Prophet, published in denmark ,was organized under his leadership with record participation of a million heads. It was a historical gathering,

(7) It was his consistent persuance that public holiday was declared on 13 Rajab and on Jumatul Vida by the then chief minister of UP. Shri Mulayam Snigh Yadav in 2007; the community had been demanding for 60 years and it was fulfilled due to his efforts.

(8)Some unauthorised posessions have been removed from the valuable land of Dargha-e-Shahe Mardan, Delhi due to his untiring efforts which are

continued for getting release of the land still in unauthorised possession.

(9) Revival of Majlise Ulemae Hind whose first meeting was held in 2007 at Imambara Ghufran Maab, Lucknow. No bigger assembly of ulema and orators has ever been witnessed in history of Indian sub- continent. About two thousand ulema and orators took. part in it.

(10) Grand Protest March against Attrocities on Muslims in Bahrain, held in Delhi and Lucknow.

(11) Grand protest March against attrocities on christians in pakistan, from Maqbara Saadat Ali Khan to G.P.O., Lucknow, under his leadership.

Besides these innumerable religiosocial services are to his credit.